अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : तृतीय - जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 07 जनवरी, 2018)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

सावधान

1. परीक्षा में नकल नहीं करें। 2. प्रामाणिकता से परीक्षा देकर ईमानदारी का परिचय दे। 3. मायावी नहीं मेधावी बनें। 4. नकल से नहीं अकल से काम लें।

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
5. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	कुल योग
प्राप्तांक						
पूर्णांक	10	10	10	28	42	100
पुनः जाँच						

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 10x1 = (10)

(a) नव तत्त्वों में रूपी तत्त्व है -

(क) जीव (ख) संवर

(ग) मोक्ष (घ) पुण्य ( )

(b) 'अनित्य भावना' भाई थी -

(क) भरत चक्रवर्ती ने (ख) हरिकेशी मुनि ने

(ग) अर्जुन अणगार ने (घ) मृगापुत्र जी ने ( )

(c) 'ऊँचे स्वर से रोना-चिल्लाना' ध्यान का लक्षण है -

(क) रौद्रध्यान का (ख) आर्त्तध्यान का

(ग) धर्मध्यान का (घ) शुक्लध्यान का ( )

(d) पाप कर्म भोगने की प्रकृतियाँ हैं -

(क) 18 (ख) 42

(ग) 82 (घ) 34 ( )

(e) किस कारण से जीव भारी होता है-

(क) पाप के सेवन से (ख) संवर के सेवन से

(ग) पुण्य के सेवन से (घ) लोभ के सेवन से ( )

(f) जीवों का भवसिद्धिपना है-

(क) परिणाम से (ख) स्वभाव से

(ग) कर्मादि से (घ) इनमें से कोई नहीं ( )

(g) यह लोक कितना बड़ा है ?

(क) संख्यात कोडा कोडी योजन (ख) संख्यातासंख्यात कोडा कोडी योजन

(ग) असंख्याता कोडा कोडी योजना (घ) इनमें से कोई नहीं ( )

(h) श्वासोच्छवास का थोकड़ा लिया गया है-

(क)प्रज्ञापना सूत्र से (ख) भगवती सूत्र से

(ग) अनुयोग द्वार सूत्र से (घ) उत्तराध्ययन सूत्र से ( )

(i) चार अनुत्तर विमान के देव श्वासोच्छवास लेते हैं-

(क)जघन्य 24 पक्ष उत्कृष्ट 25 पक्ष में (ख) जघन्य 31 पक्ष उत्कृष्ट 33 पक्ष में

(ग) अनियत समय में (घ) जघन्य 17 पक्ष उत्कृष्ट 18 पक्ष में ( )

(j) किस श्रमण निर्ग्रन्थ का सुख ग्रह नक्षत्र तारा इन तीन ज्योतिषी देवों के सुख से बढ़कर होता है-

(क) दो मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण का

(ख) छह मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण का

(ग) चार मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण का

(घ) पाँच मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण का ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) साधरण, वनस्पति का भेद है। ( )

(b) बिना उपयोग के लापरवाही से लगने वाली क्रिया अणाभोगवत्तिया क्रिया है। ( )

(c) संसार भावना नमिराज ऋषि ने भाई थी। ( )

(d) जिसे प्रायश्चित्त का ज्ञान नहीं है, ऐसे अगीतार्थ मुनि के पास आलोचना करे तो छण्णं प्रायश्चित्त का दोष है। ( )

(e) 18 पापों का आचरण करके जीव कर्मों की स्थिति बढ़ाता है। ( )

(f) अव्यवहार राशि में ऐसे अनन्तानन्त जीव हैं जिन्हें कभी वहाँ से निकलने का अवसर ही नहीं मिल पाता। ( )

(g) चार अनुत्तर विमान में जीव दो बार से अधिक जन्म नहीं लेता है। ( )

(h) देवताओं में अन्तर्मुहूर्त तक श्वास लेने छोड़ने की प्रक्रिया चलती रहती है। ( )

(i) श्वासोच्छवास की प्रक्रिया हर गति जाति आदि जीवों में एक समान होती है। ( )

(j) बारह मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण निर्ग्रन्थ का सुख पाँच अनुत्तर विमान के देवों के सुख से बढ़कर होता है। ( )

प्र.3 मुझे पहचानो :- **10x1 = (10)**

(a) मैं प्रायश्चित्त का वह दोष हूँ, जो दूसरों को सुनाने के लिए जोर-जोर से बोलकर आलोचना करता हूँ। .....

(b) मैं ज्ञान विनय का पाँचवाँ भेद हूँ। .....

(c) मैने लोक भावना भाई थी। .....

(d) मेरा सेवन करके जीव संसार सागर में रूलता है। .....

(e) मैं वह राशि हूँ जिसके सभी जीव अवश्य मोक्ष में जाते हैं। .....

(f) मैने देवानंदा की तरह दीक्षा लेकर और केवल ज्ञान प्राप्त कर मोक्ष गति को प्राप्त किया। .....

(g) भव भ्रमण करता हुआ जीव मेरे स्थान पर अनन्त बार उत्पन्न नहीं हुआ है। .....

(h) मेरा श्वासोच्छ्वास जघन्य 28 पक्ष उत्कृष्ट 29 पक्ष में होता है। .....

(i) मेरा सुख सनत्कुमार और माहेन्द्र देवलोक के देवों के सुख से बढ़कर होता है। .....

(j) मेरा सुख असुर कुमारों से बढ़कर होता है। .....

प्र.4 एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए। 14x2 = (28)

(a) नवतत्त्वों में कौन से तत्त्व जानने योग्य, छोड़ने योग्य, ग्रहण करने योग्य है ?

.....

.....

(b) पन्द्रह परमाधामी देवों के नाम लिखिए।

.....

.....

(c) रस परित्याग के 9 भेदों के नाम लिखिए।

.....

.....

(d) 'विपरिणामानुप्रेक्षा' का अर्थ लिखिए।

.....

.....

(e) प्रायश्चित्त देने वाले के अपरिश्रावी गुण को समझाइए।

.....

.....

(f) आर्त्तध्यान के चार लक्षण लिखिए।

.....

.....

(g) प्रकृति बंध किसे कहते हैं?

.....

.....

(h) अतीर्थसिद्ध को परिभाषित कीजिए।

.....

.....

(i) **किस कारण से जीव संसार को बढ़ता है और किस आचरण से संसार को घटाता है ?**

.....

.....

(j) **अधर्मी जीव सोते हुए अच्छे क्यों बताए गए हैं ?**

.....

.....

(k) **अहो भगवन्! क्या यह जीव सब जीवों के मातापने भाईपने पुत्रपने उत्पन्न हुआ है ?**

.....

.....

(l) **जिन जीवों के एक बार भी प्रत्येक नाम कर्म का उदय हो चुका है, वे किस राशि के जीव कहलाते हैं?**

.....

.....

(m) **ज्योतिषि देवों का श्वासोच्छ्वास लिखिए।**

.....

.....

(n) **छठे देवलोक के देवों का श्वासोच्छ्वास लिखिए।**

.....

.....

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार वाक्यों में लिखिए : - **14x3=(42)**

(a) **सोलह वाणव्यन्तर व दस त्रिजृम्भक के नाम लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(b) **दस प्रकार की प्रतिसेवना के नाम व प्रथम चार प्रतिसेवना के अर्थ लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(c) **प्रशस्तकाय विनय व अप्रशस्तकाय विनय के भेदों के नाम लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(d) **शुक्ल ध्यान के चार लक्षणों का वर्णन कीजिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(e) **मोक्ष तत्त्व के भाव द्वार व अल्प बहुत्व द्वार को समझाइए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(f) **बुद्धबौधित सिद्ध, एकसिद्ध, अनेकसिद्ध को समझाइए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(g) **लोक भव सिद्धिक जीवों से कभी खाली नहीं होता, कैसे? दृष्टांत सहित समझाइए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(h) **व्यवहार राशि के सभी जीव मोक्ष में जाने पर भी व्यवहार राशि में जीव बराबर बने रहते हैं, कैसे? दृष्टांत सहित समझाइए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(i) **श्रोत्रेन्द्रिय के वश में हुआ जीव कैसे कर्म बांधता है ?**

.....

.....

.....

.....

.....

(j) **संसार में ऐसी कोई जगह नहीं बची, जहाँ इस जीव ने जन्म-मरण नहीं किया हो। इस बात की पुष्टि करने वाले कोई चार कारण लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(k) **एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक के जीवों की श्वासोच्छ्वास की प्रक्रिया बताइए।**

.....

.....

.....

.....

(l) **देवताओं में श्वास ग्रहण की प्रक्रिया उदाहरण सहित बताइए।**

.....

.....

.....

.....

(m) **श्रमण निर्ग्रन्थों के निरतिचार संयम पर्याय का पालन करने से शाश्वत सिद्धि रूप सुख को प्राप्त होता है, कैसे? स्पष्ट कीजिए।**

.....

.....

.....

.....

(n) **दस मास, ग्यारह मास, बारह मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण निर्ग्रन्थों का सुख किनसे बढ़कर होता है? लिखिए।**

.....

.....

.....

.....